



# Text of PM's speech at the inauguration of Dhola-Sadiya Bridge across River Brahmaputra on 26 May, 2017

Posted On: 26 MAY 2017 2:30PM by PIB Delhi

आज अनेक वर्षों से आप जिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, वो दलोंग का निर्माण हो गया, लोकार्पण हो गया। मैं आप सबसे आग्रह करता हूँ इस खुशी के समय आप अपना मोबाइल फोन बाहर निकालइये, अपने मोबाइल फोन का लाइटफ्लैश किजिए और सबको यह सिगनल दीजिए कि कितना बड़ा उत्सव मना रहे हैं आप लोग, हर कोई अपने मोबाइल फोन का फ्लैश चालू करें। शाबाश। हर कोई। चारों तरफ, हर कोई। लगना चाहिए कि कोई बड़ा उत्सव मना रहे हैं आप हर किसी की लाइट जलनी चाहिए। हां, वहां पीछे भी हो रहा है। वाह। देखिए कैसा उत्सव मनाया जा रहा है। ये सारे कैमरा वाले भी आप ही को ले रहे हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद आप सबका। भाईयों-बहनों यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आज उस स्थान पर आने का सौभाग्य मिला है, जो कभी कुंडिलनगर के रूप में जाना जाता था, और द्वारका के नाथ श्री कृष्ण यहां पधारे थे। मेरा जन्म गुजरात में हुआ, जहां पर द्वारिका जी हैं और श्री कृष्णभगवान का नाता कुंडिल नगर से रहा और आज यह मेरा सौभाग्य है कि उस विरासत पर आ करके पिछले पांच दशक से आप सब जिसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, वह ब्रिज आज आपको प्राप्त हो रहा है। अगर अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार 2004 में दोबारा चुन करके आई होती तो यह ब्रिज आज से दस साल पहले आपको मिल गया होता। लेकिन बीच में सरकार बदल गई, रुकावटें आईं, होती हैं, चलती हैं, ऐसा ही चला और उसके परिणाम आपका सपना डगमगाता रहा, लेकिन पिछले तीन साल में अटल जी ने जो सपना देखा था, उसको पूरा करने के लिए लगातार प्रयास हुए और आज जब असम में भारतीय जनता पार्टी की सरकार को एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। सर्बानंद जी के नेतृत्व में असम अनेक समस्याओं से मुक्त तो होता चला जा रहा है। ऐसे अवसर पर यह ब्रिज आपको समर्पित करते हुए न सिर्फ असम की जनता के लिए गर्व का विषय है, लेकिन यह पूरे हिंदुस्तान के लिए गर्व का विषय है कि इतना हिंदुस्तान का सबसे लम्बा ब्रिज आज असम के दूसरे छोर पर बन रहा है।

यह बात निश्चित है अगर विकास को स्थायी रूप देना है, स्थायी रूप से विकास को गति देनी है, तो **infrastructure** पहली आवश्यकता होती है। **physically infrastructure, social infrastructure** यह दो पटरी पर संतुलित विकास संभव होता है। अगर हम **infrastructure** का महत्वमय नहीं समझेंगे तो छुटमुट प्रयासों का परिणाम बहुत ही अल्पकालीन होता है, अस्थायी होता है और इसलिए हमारी सरकार का यह लगातार प्रयास है कि विकास को स्थायी रूप दिया जाए, व्यवस्थाएं विकसित की जाए और जिसके कारण जिस सपने को ले करके देश आगे बढ़ाना चाहता है। उन सपनों को हम भलिभांति पूर्ण कर पाएं। अरुणाचल प्रदेश और असम को यह ब्रिज जोड़ दे रहा है, निकट ला रहा है। 165 किलोमीटर का अंतर कम होना व्यक्ति के जीवन के मूल्यावान 6-7 घंटे बच जाना और एक बार ऐसी व्यवस्था खड़ी होती है तो आर्थिक विकास के भी नये द्वार खुल जाते हैं।

अब हमारा सदिया, वहां का अदरक, वहां के किसान जो **ginger** पैदा करते हैं। उत्तम कक्षा का **ginger** जहां पैदा होता है पूरी भूमि पर, अब यह ब्रिज बनने के बाद एक बहुत बड़े मार्केट के लिए इन किसानों के लिए नया रास्ता खुल जाएगा। उनकी कमाई में वृद्धि होगी। और मुझे विश्वास है कि **north-east** में सदिया जैसा क्षेत्र जहां **ginger** उच्च कोटि का अदरक माना जाता है। अगर यहां के किसान **organic** की तरफ चले गए तो यहां के **ginger** का ग्लोबलमार्केट खड़ा हो सकता है। दुनिया में उसका एक बड़ा मार्केट खड़ा हो सकता है। और इसलिए यह ब्रिज सिर्फ पैसे बचाएगा, समय बचाएगा ऐसा नहीं, लेकिन यह ब्रिज एक नई अर्थकांति का अधिष्ठान ले करके आता है। एक नई **economical revolution** का **base** बनने वाला है, और इसलिए आज के इस ब्रिज का लोकार्पण पूरे हिंदुस्तान के लोगों का इस पर ध्यान है कि भारत में इतना बड़ा निर्माण कार्य होता है किसी भी हिंदुस्तानी को एक गर्व देने वाला काम है। भाईयों-बहनों दो राज्यों के विकास में यह ब्रिज कड़ी बन रहा है। अरुणाचल का विकास, असम का विकास और एक प्रकार से हमारा जो सपना है कि भारत को विकास की नई ऊंचाईयों पर ले जाने में सबसे बड़ी ताकतप्राप्त करने की अगर कोई जगह है संभावना है तो वो पूर्वी हिंदुस्तान है। पूर्वोत्तर हिंदुस्तान है। ईस्टर्न इंडिया है, नॉर्थ ईस्ट भी है। और इसलिए हमने हमारे विकास की जो योजनाएं लागू की हैं, उन सबमें पूर्व हिंदुस्तान को बलदेना, **north-east** को व्यवस्थाएं देना, **north-east** के अंदर वो ताकत है अगर उनको थोड़ी सी भी व्यवस्थाएं मिल जाए तो बहुत बड़ा चमत्कार कर सकते हैं। और इसलिए हमने हमेशा इस बात पर बल दिया है कि विकास को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए इसको प्रयास किया जाए।

प्रति दिन सिर्फ डीजल की बचत से इस इलाके के नागरिकों का रोजाना दस लाख रुपया बचने वाला है, इस ब्रिज के कारण। समय तो मूल्यावान है ही है, लेकिन डीजल की बचत से भी रोजाना 10 लाख रुपये की बचत सामान्यनागरिक के जेब में पैसे बचने वाले हैं। यह अपने आप में सामान्य मानव के जीवन में...पहले हम फैंरी सर्विस से जाते थे, अगर मौसम ठीक नहीं रहा तो फैंरी सर्विस बंद हो जाती थी। ब्रह्मपुत्रा रूठ गई हो फैंरी सर्विस रुक जाती थी। अब यह ब्रिज के कारण 24/7, 365 days हमारे लिए व्यवस्था बन गई है और इसलिए प्राकृतिक प्रकोप से हमारी गति को कभी रुकावट नहीं आएगी। यह काम इसके द्वारा हुआ है। और इसके कारण इससे साथ-साथ जैसानितिन जी बता रहे थे कि देश में हम लोगों ने रास्तों का महत्व, पूल का महत्वमय, ब्रिजेज का महत्वमय, रेल का महत्वमय, हवाई यात्रा के महत्वमय अब उसके साथ-साथ **water way** को भी बल देने की दिशा में हम प्रयासकर रहे हैं। बड़ा महत्वकांक्षी कार्यक्रम है कि जहां-जहां नदी है, पानी है क्यो न हमारे **transportation** को उस तरफ **shift** कर दिया जाए। **enviornment freindly** होगा, आर्थिक रूप से कम खर्च वाला होगा और जो समय की बर्बादी होती है, उससे भी बचाव होने वाला हो उस काम को भी इसी ब्रह्मपुत्रा के इसी छोर पर से बहुत तेज गति से आगे बढ़ाने की दिशा में हजारों करोड़ रुपयों की लागत से वो काम यहां हो रहा है और आने वाले दिनों में एक नया क्षेत्र जलपरिवहन का भी यही से आगे बढ़ने वाला है। तब जा करके आप कल्पना कर सकते हैं। यह पूरा क्षेत्र विकास की एक ऐसी नई ऊंचाईयों को पार करेगा इसका आप भलिभांति अंदाज कर सकते हैं।

भाईयों-बहनों,

यह खर्च जब हम कर रहे हैं तब पूरे **north-east** के विकास के लिए भी, चाहे बिजली के **infrastructure** की बात हो, चाहे **optical fiber network** के **infrastructure** की बात हो, चाहे **road** के **infrastructure** की बात हो, चाहे रेल के **infrastructure** की बात हो, पूरे **north-east** को हिंदुस्तान के हर कौने से जोड़ना, हिंदुस्तान के हर कौने के लोगों को हमारे इस पूर्वोत्तर भातर के साथ जोड़ना उस दिशा में हम तेज गति से आगे चल रहे हैं। जो काम 15-15, 20-20 सालों में नहीं होते हैं। जो धन 15-15, 20-20 सालों में नहीं खर्च किया जाता है, हमारी सरकार ने आ करके उतनी बड़ी मात्रा में धन **north-east** के **infrastructure** और विकास के कामों के लिए खर्च करने की दिशा में हमने बल दिया है।

**Act East Policy** के तहत अगर हम इस क्षेत्र को एक विश्वस्तरीय **infrastructure** के नमूने के रूप में तैयार करे तो पूरे **south-east** एशिया उसकी **economy** के केंद्र बिंदु में भारत का यह भू-भाग बहुत बड़ी अहम भूमिका अदा करसकता है। और इसलिए हम उस **vision** के साथ पूरे **south-east** एशिया के अंदर भारत किस प्रकार से जुड़े आर्थिक-व्यापारिक व्यवस्थाओं में हमारा यह क्षेत्र के साथ केंद्रवर्ती बने, एक **economical activity** का **hub** कैसे बने और इसके लिए जिन-जिन व्यवस्थाओं का विकास करना चाहिए उसी के तहत हम बल दे रहे हैं। और जिसके परिणाम आने वाले दिनों में आपको नजर आने वाले हैं।

भाईयों-बहनों,

रेलवे का महत्वमय आजादी के 50 सालों के बाद भी रेलवे को जितना महत्व देना चाहिए था **north-east** में हमने उसको प्राथमिकता दी है, ताकि एक सुरक्षित यातायात की व्यवस्था हम निर्माण कर सके। **north-east Tourism** के लिए भी एक बहुत बड़ा केंद्र बन सकता है। यहां की प्रकृति मां कामाख्या के दर्शन करने हो या कोहिमा तक जाना हो यह ऐसा सुंदर प्रदेश है जिससे आज हिंदुस्तान के बहुत लोग अभिज्ञ है। अगर देश से लाखों लोग हर साल इस भू-भाग पर आना शुरू कर दें तो यहां की **economy** को कितनी बड़ी ताकत मिल सकती है, जिसका हमें पूरा अंदाजा है और इसलिए इन व्यवस्थाओं के विकास के द्वारा हिंदुस्तान के कौने कौने से और धीरे-धीरे विश्वभर के लोगों को टूरिज्म की दृष्टि से आकर्षिक करने के लिए यह क्षेत्र एक बहुत बड़ी हमारी प्राकृतिक सम्पदा का हिस्सा है और उसको बल देने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं।

भाईयों-बहनों,

आज जब मैं इस महत्वपूर्ण ब्रिज का लोकार्पण कर रहा हूँ, तो आपके यहां इसको धौला, सदिया, दलंग के नाम से जानते हैं आप लोग। आज एक ऐसा अवसर है कि हमारी सरकार ने निर्णय किया है कि इस दलंग को अब से हम इसी धरती की संतान जिसकी आवाज ने हिंदुस्तान को आज भी प्रेरणा दी है और इसी धरती की संतान श्रीमान भूपेन हजारिका यह इस ब्रिज का नाम भारत सरकार ने भूपेन हजारिका के नाम से करने का तय किया है। इस धरती की संतान को यह हमारी उत्तम श्रद्धांजलि है आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने वाला यह नाम, वो ब्रह्मपुत्र के सपूत थे, वे ब्रह्मपुत्र के उपासक थे उनकी हर बात में ब्रह्मपुत्र का गुणागान हुआ करता था। वो जिये भी ब्रह्मपुत्र का गुणागान करते हुए, वो जीवनभर ब्रह्मपुत्रा को देश और दुनिया में परिचित कराने का अद्भुत काम उस महापुरुष ने किया था, आज उसी महापुरुष के नाम पर इस सेतु का नाम भी, इस ब्रिज का नाम, इस दलंग का नाम भूपेन हजारिका के नाम से जोड़ने का हमने तय किया है। मैं फिर एक बार श्री मान सर्बानंद जी को उनकी पूरी टीम को असम की एक साल की सरकार को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। मैं संतोष प्रकट करता हूँ कि एक साल में ऐसी-ऐसी कठिन बातों को उन्होंने स्पृश किया है, हाथ लगाया है और रास्ते खोजने का प्रयास किया है।

पहली बार सरकार बनी हो, पहली बार मुख्यमंत्री का दायित्व आया हो और 15 साल तक असम का जो हाल हुआ था। ऐसी परिस्थिति में से असम को बाहर निकालने के लिए जो मेहनत यहां की सरकार कर रही है। यहां के मुख्यमंत्री और उनकी टीम काम कर रही है, मैं उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और जिस गति से, जिस लगन से एक साल में काम करके दिखाया है, 5 साल के भीतर-भीतर तो असम इन सारी कठिनाईयों से बाहर निकलकर रहेगा यह मैं अपना विश्वास प्रकट करता हूँ। और भारत सरकार कंधे से कंधा मिलाकर **A for असम**, यह जो हमने सपना देखा था उसको पूरा करने के लिए कंधे से कंधा मिला करके काम करेंगे। इसी एक विश्वास के साथ मैं फिर एक बार आप सबका धन्यवाद करता हूँ। भारत माता की जय।

\*\*\*\*

अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज हसीबी/तारा

